'गर करुणा को मेरी छू दे त

'गर कोई करुणा को मेरी छू दे तो
मैं करुणा का सागर बन जाऊंगा
कोई प्रेम का बीज यूं बो दे तो
मैं स्वयं वात्सल्य प्रतीक हो जाऊंगा
गर्त की दल-दल में फंस गया हूं
मुझे निकलने की उसमे से जरूरत है
दिल का मेरा कोई तार टुटा है शायद
जोड़ने की उसे जरूरत है
मुझे, मेरे भीतर को छूने की जरूरत है
अहसास को मेरे जगाने की जरूरत है
इसीलिए,
मुझे राहगीर की तलाश है जो राहें मेरी तराश दे
मुझे मसीहा की ऐसे तलाश है जो दिल को मेरे छू दे।
तो!
मैं करुणा का सागर बन जाऊंगा,
'गर कोई करुणा को मेरी छू दे तो
अंतर्मन झंकृत हो जायेगा,
'गर टूटे तार को कोई जोड़ सके तो
मैं धन्य-धन्य हो जाऊंगा,
'गर रहनुमा कोई मिल जाये तो

छूने के बाद का अहसास!
अरे ये क्या हुआ, मैं तो सहसा बदल गया !
मुझे कोई छू गया और मैं 'छू' गया
मैं मोम हुआ, मैं पिघल गया!
हैरान हूं - बीज धरती में डाले बिना दया का
वह मेरे अन्दर पैदा भी हो गई
और जवां होकर वह करुणा भी बन गई।

केवल चंद ही पलों में
मैं दया का सागर हो गया,
ये सब कैसे हुआ, क्योंकर हुआ
शायद कोई छू गया,
गहराई तक दिल के चला गया
गोते लगाकर सागर की तलहट्टी से
दया का भाव उठाकर
सतह पर इस तरह ला रख दिया
कि मै देखता रह गया,
पल ही भर में, क्या से क्या हो गया।

मैं छू गया, मेरे दिल के तार बज उठे
मैं आनन्द में अनोखे डूब गया।
क्योंकि, कोई छू कर मुझे
करुणा का सागर बना गया।
मुझे कोई छू गया, तो यूं लगा
कि मेरा सर्वस्व ही बदल गया!
मैं पिघल गया, मै मोम हुआ
मेरा अस्तित्व ही जैसे पलट गया।

मैं तो पत्थर था, क्रूर था, दैत्य था
मेरा केवल रूद्र रूप था, राक्षसी आन थी
फिर यह क्या हुआ? कैसे मैं बदल गया?
कैसे मैं मोम हुआ, कैसे मैं पिघल गया?

शायद कोई छू गया!
कुछ इस तरह से भीतर के तार जोड़ गया
कि मैं छू गया, और वह भी कुछ इस तरह
कि मैं विशाल हुआ, मैं दरया हुआ
मैं सागर हुआ, मैं पर्वत हुआ
कि मैं छू गया, वह भी कुछ इस तरह
कि सागरों की गहराई से गहरा हुआ
पर्वतों की ऊंचाई से ऊंचा हुआ
धरती की विशालता से विशाल हुआ
दरख्त सा विनम्र हुआ, झील के जल से स्वच्छ हुआ
मैं छू गया, मैं बदल गया
मैं मोम हुआ, मैं पिघल गया।

वह कौन था मुझे जो छू गया?
वह कौन था जो सागर मुझे बना गया?
वह कौन था जो, अन्दर की करुणा को मेरी जगा गय
वह कौन था जो दैत्य से देव मुझे बना गया?
वह कौन था जो प्रकाश पुंज मुझे बना गया ?
जो भी था, जो भी थी, मैं तो छू गया!
मैं बदल गया, मैं मोम हुआ, मैं पिघल गया।

यह एक अहसास था!
बिना रंग के रूप के, जान के, आकार के,
वह अहसास मुझको छू गया
मेरे दिल के तार छेड़ गया
वह भी कुछ इस तरह कि
मैं विशाल हुआ, मै दरया बना,
मैं सागर बना, पर्वत बना,
मैं झील हो गया, मैं सरासर बदल गया।

अब, पारस मैं बन गया!
मैं भी औरों को 'गर छू सकूं तो,
जीवन मेरा धन्य हो जायेगा
मैं खुद दया का सागर बना, कृपा निधान बना
दीप मैं बन गया, और कई दीपक जला गया
मैं धन्य हुआ, जो मैं छू गया,
कोई मुझे छू गया
और मैं छू गया!

प्रस्तुति- डॉ. स्वतन्त्र